PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 8, ISSUE 1

समकालीन हिन्दी कविता में व्यंग्य

डॉ. भरत ए. पटेल
हिन्दी विभाग
विजयनगर आर्ट्स कॉलेज , विजयनगर ,
उत्तर गुजरात भारत

आधुनिक हिन्दी कविता अनेक वादों और पड़ावों से गुजरती हुई नई भूमि को तलाशती–तराशती हुई निरंतर नवीन पथ पर अग्रसर हो रही है | सामान्यत: सन् १९६० के पश्चात् लिखी गई कविता को समकालीन हिन्दी कविता के नाम से पहचाना जाता है | यह वह समय था , जब देश की आजादी को लेकर प्रजा ने सँजोये सुनहरे सपने खण्ड-खण्ड और चूर-चूर हो रहे थे | प्रजा महसूस करने लगी कि राजनेताओं ने स्वराज्य के नाम पर हमें ठग लिया है | प्रजा की समस्याएँ दूर होने की जगह और जटिल होती जा रही थी | इस मोहभंग की स्थिति में देश के कुछ जनवादी कवियों ने जनता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को व्यक्त करते हुए साधारण जन की मजबूरियों , दु:ख-दर्द और पीड़ा को व्यंग्यात्मकता के साथ प्रस्तुत करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है | इनमें नागार्जुन एक ऐसे युगचेता और जनवादी कवि हैं , जिन्हों ने ' सर्वहारा जनगण ' के शोषण , गरीबी , भूख , अत्याचार , दु:ख आदि को अपनी कविता में मार्मिक और सशक्त अभिव्यक्ति दी है | वे अपनी युगीन परिस्थितियों और समस्याओं से वाकिफ भी हैं और आम जनता के प्रति प्रतिबद्ध भी हैं –

" प्रतिबद्ध हूँ , जी हाँ , प्रतिबद्ध हूँ –
बहुजन समाज की अनुपल प्रगति के निमित्त –
संकुचित ' स्व ' की आपाधापी के निषेधार्थ
अविवेकी भीड़ की भेड़िया-धसान के खिलाफ
अंध-बधिर व्यक्तियों को सही राह बतलाने के लिए | " १

VOL 8, ISSUE 1 www.puneresearch.com/scholar FEB to MAR 22
(IMPACT FACTOR 3.14 IIJIF) INDEXED, PEER-REVIEWED / REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL

स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् देश-सेवा और समाज-सुधार के नाम पर देश के कर्णधार निजी स्वार्थ , लूट-खसोट , भ्रष्टाचार और दलबदल की गंदी राजनीति में सराबोर हो गए | इस मोहभंग की स्थिति ने आम आदमी को भीतर से झकझोर दिया , वह निराशा , हताशा , पीड़ा और त्रासदी से भर गया | सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की कविता इन्हीं त्रासद , विद्रूप और विसंगत स्थितियों पर आक्रोशपूर्ण व्यंग्य करती है –

" रो-गाकर आजादी लाये , पहन लंगोटी खादी ,
चार कदम भी चल नहीं पाये , इतनी बढ़ गई बादी ,
रंग तरबूजे का , महक खरबूजे की | " २

गाँधीजी स्वातंत्र्य-आंदोलन के मुख्य जननेता थे | उनके व्यक्तित्त्व , विचारों और आदर्शों से सारा देश प्रभावित था | स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद भारतीय नेता गाँधीजी के आदर्शों की दुहाई देकर उसकी आड़ में अपनी स्वार्थ-पूर्ति करने लगे | अपनी सत्ता-लालसा , स्वार्थपरता , दोगलापन , छल-कपट , रिश्वतख़ोरी , भ्रष्टाचार , दल-बदल वृत्ति आदि को छिपाने के लिए गाँधीजी के आदर्शों का दुरुपयोग होने लगा | नागार्जुन ने नेताओं की इस धाँधली को सीधे शब्दों में इस प्रकार अनावृत्त कर दिया है –

" गाँधीजी का नाम बेचकर , बतलाओ कब तक खाओगे ?
यम को भी दुर्गंध लगेगी , नरक भला कैसे जाओगे ? " ३

व्यंग्य-सम्राट हरिशंकर परसाई के शब्दों में कहे तो भ्रष्ट , दोगले , पाखंडी नेता ' गाँधीजी का ओवरकोट ' पहनकर अपनी सारी काली करतूतें छिपा लेते हैं | राजनीति के साथ-साथ पूरा प्रशासन-तंत्र गाँधीवाद की दुहाई देता रहता है | सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने अपनी कविता ' पंचधातु ' में इस पर करारा व्यंग्य किया है –

" मैं जानता हूँ
क्या हुआ तुम्हारी लंगोटी का
उत्सवों में अधिकारियों के
बिल्ले बनाने के काम आ गयी
भीड़ से बचकर एक सम्मानित विशेष द्वार से

आखिर वे उसी के सहारे ही तो जा सकते थे
और तुम्हारी लाठी ?
उसी को टेककर चल रही
एक बिगड़ी दिमाग डगमगाती सत्ता
और तुम्हारा चश्मा ?
इतने दिनों से हर कोई
इसे ही लगाकर
दिखाता रहा है अंधों को करिश्मा | " ४

स्वाधीनता-संग्राम के समय भारतीय जनता ने जिस राम-राज्य की कल्पना की थी , वह आजादी मिलने के बाद चूर-चूर हो गई | गाँधीजी के तथाकथित अनुयायियों ने अपनी स्वार्थ-पूर्ति के लिए सारे आदर्शों और प्रतिबद्धता को तिलांजलि दे दी | इस धोखेबाज़ी पर कवि नागार्जुन का आक्रोश इस प्रकार फूट पड़ता है –

" लाज शरम रह गई न बाकी गाँधीजी के चेलों में |
फूल नहीं लाठियाँ बरसती राम राज्य की जेलों में |
भैया लंदन ही पसंद है आजादी की सीता को |
नेहरुजी अब उमर गुजारेंगे अंगरेजी खेलों में | " ५

आजादी के पश्चात् भी भारतीय शासक साम्राज्यवादी अंग्रेज शासकों सी जुड़े हुए थे | भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और अन्य पूंजीवादी नेता ब्रिटेन की राजसत्ता और रानी एलिज़ाबेथ के हाथों की कठपुतली बने हुए थे | एलिज़ाबेथ के स्वागत में तत्पर भारतीय शासकों की समझौतावादी नीति पर नागार्जुन ने चुटीला व्यंग्य किया है –

" आओ रानी , हम ढोएँगे पालकी
वही हुई है राय जवाहरलाल की
आओ बंदनवार सजाएँ
खुशियों में डूबे उतराएँ
आओ , तुमको सैर कराएँ-
उटकमंड की , शिमला-नैनीताल की

आओ रानी , हम ढोएँगे पालकी | " ६

कुछ अवसरवादी नेताओं ने सत्ता के सूत्र हांसिल कर ऐसी धाँधली मचाई कि जनता हतप्रभ-सी होकर देखती ही रह गई | देश कि विभिन्न स्थितियों और सामान्य जनजीवन की दशा-दिशा में कोई खास परिवर्तन नहीं आया | समस्याओं का समाधान जुटाने की बजाय प्रजा का ध्यान दूसरी ओर भटकाने तथा झूठे वादे कर जनता को गुमराह करनेवाले नेता पर जनवादी कवि धूमिल का आक्रोश बिल्कुल वाजिब है –

" उसी लोकनायक को
बार-बार चुनता रहा
जिसके पास हर शंका और
हर सवाल का एक ही जवाब था
यानी कि कोट के बटन होल में
महकता हुआ एक फूल
गुलाब का |
वह हमें विश्व-शान्ति और पंचशील के सूत्र समझाता रहा | " ७

भारत विश्व का सबसे बड़ा जनतांत्रिक देश है | लेकिन हमारे भ्रष्ट और स्वार्थी नेताओं ने ऐसी धाँधली मचाई है कि अब धीरे-धीरे प्रजा का विश्वास जनतंत्र से उठता जा रहा है | प्रजा के विकास के नाम पर नेता लोग अपना ही विकास कर रहे हैं | इस अराजकता पर धूमिल ने भरपूर कशाघात किया है –

" ऐसा जनतंत्र है जिसमें
जिंदा रहने के लिए
घोड़े और घास को
एक जैसी छूट है
कैसी विडम्बना है
कैसा झूठ है
दरअसल , अपने यहाँ जनतंत्र
एक ऐसा तमाशा है
जिसकी जान

मदारी की भाषा है | " ८

स्वराज्य मिलने के कई वर्षों के बाद भी देश की समस्याओं , प्रश्नों और स्थितियों में कोई खास बदलाव नहीं आया है | विदेशी शासकों और स्वदेशी शासकों के शासन में कोई खास फर्क महसूस नहीं होता है | हरिशंकर परसाई ने इसे 'ट्रांसफर ऑफ पावर नहीं , ट्रांसफर ऑफ डिश ' कहा है | इस विद्रूप स्थिति से आहत कवि अपने आप से प्रश्न करता है कि क्या ऐसी आजादी के लिए सैंकड़ों लोगों ने बलिदान दिये थे ? स्वराज्य का क्या यही मतलब होता है ? कवि धूमिल के शब्दों में –

" बीस साल बाद
मैं अपने आप से एक सवाल करता हूँ
जानवर बनने के लिए कितने सब्र की जरूरत होती है ?
- - - - - - - - - - - - - - - - -
क्या आजादी सिर्फ तीन थके हुए रंगों का नाम है ?
जिन्हें एक पहिया ढोता है
या इसका कोई खास मतलब होता है ? " ९

इस देश के सूत्रधार जिसे छूते हैं , वह चीज अपवित्र हो जाती है | हर अच्छी बात , हर अच्छा विधान उनके मुँह से निकलकर बुरा और गंदा लगता है | न्याय , शिक्षा , संस्कृति , धर्म जैसे पवित्र क्षेत्र भी राजनीति के गंदे हाथों मैले और धुँधले हो चुके हैं | नेताओं के झूठे भाषण और काले कारनामों से देश और समाज भीतर से खोखला होता जा रहा है | सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने ' गोबरैले ' नामक कविता में इस तथ्य की भरपूर खिल्ली उड़ाई है –

" अच्छे से अच्छा शब्द फूलकर
गोबरैले में बदल जाता है
और बड़े से बड़े विचार को
गंदी गाली की तरह ठेलने लगता है-
चाहे वह ईश्वर हो या लोकतंत्र
गोबरैले बढ़ रहे हैं , गोबरैले बढ़ रहे हैं | " १०

रामदरश मिश्र समाजवादी विचारधारा के कवि हैं | अत: सामाजिक यथार्थ से उनका गहरा सरोकार है | मोहभंग की स्थिति , भ्रष्टाचार , बेईमानी , बेरोजगारी , गरीबी और स्वार्थ की राजनीति आदि से

आतंकित कवि का आक्रोश उनकी कविता में व्यंग्य के रूप में अभिव्यक्त हुआ है | ' साक्षात्कार ' नामक दीर्घ-कविता में कवि ने स्वतंत्र भारत में व्याप्त परतंत्रता और परमुखापेक्षिता पर करारा व्यंग्य किया है –

" और हर आदमी स्वतंत्र होकर भी
स्वतंत्र होने के लिए छटपटा रहा है
देश की अपनी दूषित ज़बानें काटकर फेंक दी गई हैं
विदेश से प्लास्टिक की सदाबहार ज़बानों का आयात हो रहा है
हमारी धूप को लकवा मार गया है
उसके लिए विदेशों में बैसाखियाँ तैयार की जा रही हैं | " ११

देश के विकास हेतु पंचवर्षीय योजनाएँ लागू की जाती हैं | इन योजनाओं के पीछे खर्च होनेवाला रुपया नेता और प्रशासनिक अधिकारी खा जाते हैं | विकास सिर्फ कागजों पर दिखाया जाता है और देश की समस्याएँ और भी खतरनाक रूप धारण कर लेती हैं -

" कोई नहीं जानता कि मंत्रालयों और फैक्टरियों में
गढ़े जाते हुए इतने सपने कहाँ जाते हैं ? " १२
- -
" हमेशा आकाश से झरती है एक नदी
और हमेशा ऊपर ही ऊपर कोई पी लेता है ,
धरती प्यासी की प्यासी रहती है
और कहने को आकाश से नदी बहती है | " १३

देश में प्रवर्तमान राजनीति में विसंगत स्थितियों के प्रति आक्रोश व्यक्त करनेवाले , आमूल परिवर्तन के लिए क्रान्ति का आह्वान करनेवाले लोग जनता को प्रभावित कर उसका समर्थन प्राप्त करते हैं | लेकिन ये नये स्वार्थी नेता अपना हिस्सा मिल जाने पर शांत हो जाते हैं | मिश्र जी ने ऐसे धूर्त , मक्कार और धनलोलुप लोगों पर भरपूर कशाघात किया है –

" लौट आये हैं वे लोग
जो कल मुट्ठियाँ ताने हुए
आँखों से आग और मुँह से झाग उगलते हुए
गये थे पीछे-पीछे एक हमलावर दस्ते के ,

दस्ते ने रास्ते में मुस्कराकर इन्हें देखा था ,
पहचान लिया था |
कि इनकी तनी हुई मुट्ठियों में संधि-पत्र बंध है
और आग और झाग के नीचे शराब बह रही है |
एक जंगली नदी के पास जाकर ये ठहर गये थे
और दस्ता अपने लूटे हुए माल का एक हिस्सा छोड़कर
पार उतर गया था |
लौट आये हैं वे लोग जो कल गये थे
और अंधेरे बंद कमरे में गुम होकर
अपने-अपने हिस्से का बँटवारा कर रहे हैं | " १४

स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय राजनीति में दल-बदल की प्रवृत्ति विशेष दिखाई देती है | नेताओं को जहाँ अपना स्वार्थ और कुर्सी नजर आती है , वे उस पार्टी में चले जाते हैं | जिस पार्टी की सरकार बनने के आसार नजर आते हैं , वे उसी में शामिल हो जाते हैं | कुछ ऐसे विशिष्ट और महान राजनेता भी होते हैं , जो किसी भी पार्टी का शासन हो , मंत्री बन जाते हैं | मिश्र जी ने इस राजनीतिक नौटंकी की बख़ियाँ उधेड़ दी हैं –

" फिर वही लोग जा रहे हैं इस सड़क से
जो कल गए थे |
आज उनकी वर्दियाँ और झंडे बदले हैं ,
आवाजें वही हैं , नारे नये हैं |
कल भी वे जनता की सेवा को बेचैन थे ,
आज भी हैं |
हाँ , आज फिर जुलूस जा रहा है ,
इस में वे ही लोग शामिल हैं
जो कल दूसरे जुलूस में थे |
लगता है आज फिर कुछ होगा
फिर किसी कुर्सी के हिलते हुए पाये को

मजबूत करने के लिए
धूप का एक टुकड़ा वहाँ दफनाया जाएगा | " १५

भ्रष्टाचार , बेरोजगारी , गरीबी , महँगाई , शोषण आदि के कारण देश के आम आदमी की स्थिति बद से बदतर होती जा रही है | वह रोटी , कपड़ा और मकान जैसी प्राथमिक आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर पाता है | गरीब आदमी के सामान्य सपने भी कभी पूरे नहीं हो पाते हैं | मिश्र जी ने इस विद्रूपता पर तीखा व्यंग्य किया है –

" हाय लोकराम बेमौत मर गया कमबख्त
तुझे किसने कहा था
कि फुटपाथ पर सोकर एक बड़ा-सा सपना देख
जानता नहीं था कि यह एक सामाजिक अपराध है | " १६

मनुष्य ने अपने स्वार्थ और सुविधा के लिए प्रकृति के व्यवस्था-चक्र को बुरी तरह प्रभावित कर दिया है | जंगल के जंगल साफ कर दिये हैं , शुद्ध हवा और जल-स्रोतों को प्रदूषित कर दिया है | इसी कारण विश्व में कुदरती आपत्तियों की संख्या बहुत बढ़ रही है | मिश्र जी ने ' चिड़िया ' नामक एक छोटी-सी कविता के माध्यम से मनुष्य की इस विध्वंसता पर कटु व्यंग्य किया है –

" चिड़िया उड़ती हुई कहीं से आयी
बहुत देर तक इधर-उधर भटकती हुई
अपना घोंसला खोजती रही
फिर थककर एक जली हुई डाल पर बैठ गयी
और सोचने लगी –
आज जंगल में कोई आदमी आया था क्या ? " १७

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद हुए आम चुनाव में कांग्रेस के सच्चे राष्ट्र-भक्त पीछे रह गए और कुछ सत्तालोलुप घुस-पैठिये राजनीति में आ गये | उन्हों ने सारे आदर्शों को ताक पर रखकर देश को दुहना शुरू कर दिया | गजलकार दुष्यन्तकुमार ने नेताओं की इस धाँधली को बेनकाब कर दिया है –

" दुकानदार तो मेले में लूट गये यारों
तमाशबीन दुकानें लगाके बैठ गये | " १८

इन्दिरा गाँधी ने अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए आपातकाल की घोषणा कर सारे विद्रोही स्वरों को बंद कर देना चाहा | देश-सुधार या राष्ट्र-कल्याण के नाम पर की गई इस घोषणा से देश की खास सड़कें या आम सड़कें बंद हो गई , जिस पर चलकर आम प्रजा अपना विरोध करती थी या दु:ख-दर्द प्रकट करती थी | भारत के लोकतंत्र पर लगा ये सबसे बड़ा काला धब्बा था | दुष्यन्त जी ने इस यथार्थ को इस प्रकार अभिव्यक्त किया है –

" खास सड़कें बंद हैं तब से मरम्मत के लिए ,
ये हमारे वक्त की सबसे बड़ी पहचान है | " १९

देश के भूखे आदमी को रोटी चाहिए , पर उसे मिलते हैं भाषण | आज स्थिति यह है कि गोदामों में विपुल मात्र में अनाज सड रहा है और देश की गरीब जनता भूख के कारण मर रही है | कृषि-मंत्री और अर्थशास्त्री भूखे लोगों को सैंकड़ों एकड़ जमीन की खेती और फसल के आँकड़े दिखाते हैं | इस विद्रुप स्थिति पर दुष्यन्त जी ने तिलमिला देनेवाला व्यंग्य किया है –

" भूख है तो सब्र कर रोटी नहीं तो क्या हुआ ,
आजकल दिल्ली में है जेरे बहस ये मुद्दा |
- - - - - -
कई फाके बिताकर मर गया , जो उसके बारे में ,
वो सब कहते हैं अब , ऐसा नहीं ऐसा हुआ होगा | " २०

इस प्रकार अनेक समकालीन हिन्दी कवियों ने अपने समय की विसंगत और विद्रुप स्थितियों पर भरपूर व्यंग्य किया है | आलेख के सीमित आकार के कारण कई कवियों को इसमें समाहित नहीं कर पाया हूँ | प्रत्येक जनवादी कवि ने अपनी युगीन विसंगतियों को व्यंग्य के अस्त्र से अनावृत्त किया है |

संदर्भ- संकेत :

१. नागार्जुन : प्रतिनिधि कविताएँ , पृष्ठ – १५
२. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की प्रतिनिधि कविताएँ , पृष्ठ –१३९
३. नागार्जुन : प्रतिनिधि कविताएँ , पृष्ठ – ८२
४. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की प्रतिनिधि कविताएँ , पृष्ठ – १४०
५. इस गुब्बारे की छाया में , पृष्ठ – ६२-६३

६. नागार्जुन : प्रतिनिधि कविताएँ , पृष्ठ – १०१-१०२
७. संसद से सड़क तक , पटकथा – पृष्ठ – १११
८. वही , पृष्ठ – ११५
९. वही , बीस साल बाद , पृष्ठ – ११
१०. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की प्रतिनिधि कविताएँ , पृष्ठ –१३९
११. रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ , पृष्ठ – २०
१२. वही , पृष्ठ – २१
१३. वही , पृष्ठ – ३२
१४. वही , पृष्ठ – ३०
१५. वही , पृष्ठ – ५५-५६
१६. हिन्दी के श्रेष्ठ प्रतिनिधि कविताएँ , पृष्ठ – ३६
१७. रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ , पृष्ठ – ४२
१८. साये में धूप , पृष्ठ – २९
१९. वही , पृष्ठ – ५७
२०. वही , पृष्ठ – १५